धर्म जीवन

जुलाई 2006

- श्रेष्ठ अधिकार और आवश्यक कर्त्तव्य
- एक ऋषि
- एक विशेष साथी सेवक
- सुन्दर साध्वी
- आज का सबसे बड़ा रतन
- बरसी की सभा

बरसी की सभा

28 मई 2006, रविवार को 18 - डी धर्मशाला में सुबह 10 बजे श्री मती जय देवी जी माता श्री मान जगदीश प्रसाद जी, के संबंध में 'पुण्य तिथि' की सभा रखी गई। श्रीमती जय देवी जी समाज की बहुत अच्छी व बहुत पुरानी सेविका थी। 30 जून 2005 को श्री गंगानगर (राज) में उनका देहांत हुआ। इस सभा में चंडीगढ़, गंगानगर और दिल्ली से उनके परिवार के सदस्य शामिल हुए । इसके अतिरिक्त कल्याण, मोहाली, पंचकूला से भी धर्म संबंधी शामिल हुए जो लगभग 50 की संख्या में थे। इस सभा के लिए, धर्मशाला के दो हालों में प्रबंध किया गया। जिसमें से एक में सभा करवाई गई, तथा दूसरे में दोपहर के खाने का इंतजाम किया गया । इस सभा के सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे।

सबसे पहले श्री मान जगदीश जी ने एक श्रद्धा विषयक भजन का गायन किया। इसके बाद, गुरू महाराज जी की छवि का फूलों के हार से अर्चन किया, देवस्त्रोत का गान व व्याख्या की गई। इसके उपरांत श्रीमती जय देवी जी की छवि का सभापित द्वारा फूलों के हार से अर्चन किया गया और फिर सभा में शामिल सभी जनों ने श्रद्धा के सुमन समर्पित किए। सभा की सफलता की प्रार्थना करने के बाद श्रीमान जगदीश जी ने 'परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराएगें' भजन का गायन किया।

महाराज जी के कथन के अनुसार सभापति जी ने ब्यान किया की हम सब पागल हैं। हम सांसारिक सुखों व पदार्थो के लिए अपनी सब शक्तियां व्यर्थ कर देते हैं जबकि ये सभी चीजें हमारे साथ परलोक नहीं जाती, यहीं रह जाती हैं। हम इस पर कभी विचार ही नहीं करते कि हम कहां से आए है, हमें कहां जाना है' और इस दुनिया में रहने का सच्चा उद्देश्य क्या है ? हम सांसरिक पदार्थो को मुख्य महत्व देते हैं तथा उसी में अपना सारा जीवन व्यतीत कर देते हैं। जबकि हमारे व्यक्तित्व में 'आत्मा' की प्राथमिकता होनी चाहिए तथा उसे नष्ट होने से बचाना चाहिए। यही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए । हम में से बहुत कम लोग इस उद्देश्य को जान पाते है; कुछ ही प्राप्त करते हैं; बल्कि काफी तो ऐसे ही परलोक में चले जाते हैं। मनुष्य को सिर्फ अपने लिए नहीं जीना चाहिए, इससे जीवन का नाश होता है।

श्रीमती जय देवी जी, अनपढ़ होने के बावजूद, बहुत गुणों की अधिकारी थी। उनमें श्रद्धा, शुक्रगुजारी के भाव कूट कूट कर भरे थे। श्रद्धावान सेविका होने के कारण वे हर उत्सव, महोत्सव पर बढ़ चढ़ कर शामिल होती थी। उनकी गुरू के प्रति सच्ची श्रद्धा थी उनकी शिक्षा को बहुत अच्छी तरह समझती थी व आस्था रखती थी। सिर्फ गुरु के लिए ही नहीं धर्म संबधियों के लिए भी उचित सम्मान का प्रदर्शन करती थी वह हमेशा धन्यवादी होती थी। इसके लिए उन्होंने हमेशा बढ़ चढ़ कर दान दिया व आंतरिक प्रसन्नता प्राप्त की । सभापति जी ने उनके गुणों को याद करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजली दी। वे सब से बहुत प्यार से बोलती थी, बहुत सफाई पसंद व बहुत कम शब्दों में बहुत कुछ सिखाने वाली बातें करती थी।

इसके उपरांत, श्री मान जगदीश जी ने माता जी के संबंध में बहुत सुंदर भावों से अपना भाव प्रकाश किया । उनके हृदय विभोर व भावुक पाठ ने वातावरण को प्रभावित किया।

सरोज जी - श्रीमान जगदीश जी की धर्मपत्नी

(बाकी पेज़ 20 पर)

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 7
जुलाई 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

श्रेष्ठ अधिकार और आवश्यक कर्तव्य

चारों ओर जिस कदर आत्म अन्धकार, आत्म अज्ञान और आत्मा एवं सत्य धर्म के विषय में नाना प्रकार के मिथ्या विश्वासों की भरमार पाई जाती है और मनुष्य अपने नीच अनुरागों एवं नीच घृणाओं के दासत्व के कारण इतना पापाचारी और अपहरणकारी बना हुआ है, कि उससे इस दुनियां में न केवल बड़े-बड़े पापाचारी और मंदकर्मी लोग महा दुखों के भागी बन रहे हैं और उनके घर नरक का नमूना बन रहे हैं, किन्तु मोटे-मोटे पापों से बचे हुए और अच्छे शरीफ और भले मानस कहलाने वाले स्त्री पुरूष भी एक दूसरे के हाथों से बहुत दुःखी और रोते हुए दिखाई देते हैं। वे प्राय: सब एक या दूसरे मत, धर्म रखकर भी क्या इस महा दुखिया और जहन्नमी अवस्था के असल कारणों के जानने और क्या इस हालात से उद्धार लाभ करके सुख और शान्ति का मुख्य हल या ठीक रास्ता नहीं देख सकते और न प्रकृति के अटल नियमानुसार देख ही सकते हैं। इसीलिए घोर आत्म अन्धकार से ग्रस्त और उच्च बोधों से शून्य होने के कारण अपनी भिन्न-भिन्न और बेठिकाने बोलियां बोलकर परस्पर के सम्बन्ध में अत्याचारी बनकर अपनी अत्यन्त असहाय मदद की मुहताज और रहम की पात्र अवस्था का परिचय दे रहे हैं। ऐसी अवस्था में जिन सौभाग्यवान स्त्री पुरूषों को बिना चाहने और बिना कोई बहुत बड़ा त्याग और संग्राम करने के आत्मिक जगत के देव सूर्य भगवान देवात्मा की शरण में आने और उनका सेवक सेवका वा देव समाज का सभासद बनने का श्रेष्ठ अधिकार प्राप्त हो गया है और उनकी आत्मिक सत्यमोक्ष, रक्षा और सर्वोच्च भलाई के लिए जिस कदर बेहद बरकतों का द्वार खुल गया है, उसके विचार से उनके महासौभाग्य और इस श्रेष्ठ अधिकार की निश्चय कोई सीमा और कीमत नहीं हो सकती क्योंकि उन्होंने भगवान देवात्मा के सेवक, सेविका होकर और बहुत से लाभों के भिन्न मोटे तौर पर निम्नलिखित बेहद लाभ प्राप्त किए हैं :-

1) उन्हें मनुष्यों के ऐसे हितकर समूह व दल में प्रवेश करने का तथा उनका सम्बन्धी बनने का सौभाग्य लाभ हुआ है कि जो सबके सब मोटे-मोटे आठ पापों और नाना प्रकार के मिथ्या विश्वासों से उद्धार लाभ कर चुके है, जिसमें रहकर जहां एक और जितना भी कोई चाहे विशुद्ध परोपकार करने वा

सेवाहारी होने की स्वतन्त्रता और मदद प्राप्त कर सकता है, वहां दूसरी ओर विविध प्रकार की अशुभ और मिथ्या की गतियों से सुरक्षित रखने या उनमें रुकावट पैदा करने के लिए एक प्रकार की निहायत जबरदस्त सामाजिक राय वर्तमान है, इसलिए यह सेवक दल ऐसे एक-एक जन के लिए निहायत रक्षाकारी और कल्याणकारी प्रमाणित हो रहा है।

2) सेवकों के इस श्रेष्ठ दल से कसरत से माननीय सेवक सेवकाओं के क्या हानि परिशोध वा हित परिशोध के, क्या जातपात की खौफनाक कैद तोड़ने के, क्या मिथ्या धर्म सूचक चिन्हों के नष्ट करने के, क्या आप अपने तन, मन और धन आदि की सब शक्तियों को भगवान देवात्मा के अद्वितीय परम लक्ष्य में भेंट धरने, क्या ब्रती, कर्मचारी व अनुरागी शिष्य बन कर धर्म प्रचार के द्वारा अधिक से अधिक संख्या में अधिकारी जनों को भगवान देवात्मा की शरण में लाकर उनके सेवक बनाने और क्या उनकी महिमा लेख और वाणी के द्वारा फैलाने और सदा उनके मूल सम्बन्ध और परम लक्ष्य को मुख्य रखने आदि के इस कदर उच्च प्रभावदायक, उत्साहप्रद और अनुकरण किए जाने के योग्य जिन्दा दृष्टान्त वर्तमान हैं, कि जो किसी को सिवाय भगवान देवात्मा के देवराज के और कहीं से भी प्राप्त नहीं हो सकते।

3) अपने और अपने पारिवारिक जनों की कई प्रकार की उलझनों को सुलझाने और किसी दुख, विपद, बीमारी और जीवन के अन्य अंगों में सहायकारी होने वाले सच्चे हमदर्द, दुख सुख के सच्चे साथी और हर तरह से विश्वास के पात्र धर्म सम्बन्धी प्राप्त हुए हैं।

4) देव समाज रूपी रक्षाकारी किले में भगवान देवात्मा के शक्तिशाली देव प्रभावों का जो अनुपम कार्य जारी है उसके जेर असर रहकर भीतर और बाहर के विनाशकारी असरों से एक-एक बेसुध आत्मा को होश में आने अपने सत्य और सार आत्मा और उसके जीवन के विषय में सत्य ज्ञान एवं सर्वांग में आत्मिक कल्याण लाभ करने की अमूल्य सामग्री प्राप्त हुई है।

तब निश्चय नाना प्रकार के विश्वासों और मोटे-मोटे पापों से रहित, कई एक स्वार्थत्यागी, परोपकारी और उच्च जीवनधारी मनुष्यों की इस अति हितकर निरादरी वा सेवक दल में शामिल होकर एक-एक जन अपने महा सौभाग्य और श्रेष्ठ अधिकार की कोई सीमा व कीमत नहीं देखता और इस श्रेष्ठ अधिकार को पाकर फूला नहीं समाता। हमारे विशेष श्रद्धा और सम्मान के योग्य श्रीमान, देवत्व सिंह जी ने इस श्रेष्ठ अधिकार को पाकर अपने एक लेख में अपने भावों का इस प्रकार प्रकाश किया था-

इस महा दुर्लभ और सर्वोच्च अधिकार को पाकर में अपने सौभाग्य की कोई सीमा नहीं देखता एक-एक बार मैं क्या अपने और क्या दूसरों के कल्याण के लिए इस कदर बेबहा खजाने खुले हुए पाता हूं, कि जिनकी तुलना में मुझे इस संसार के सारे खजाने और सकल पदार्थ हेच और नीच अनुभव होते हैं।

अब ऐसे अधिकार को पाकर हितस्वरूप भगवान देवात्मा के प्रत्येक सेवक सेविका का (विशेषकर जो सेवक सेविका इस श्रेष्ठ अधिकार को पाने आदि के लिए बेबहा बरकतों का दाता बोध करते हैं, यह अति आवश्यक कर्त्तव्य है, कि वह भगवान देवात्मा के सेवक होकर जिस अमूल्य लाभ के अधिकारी बने हैं,

उसकी रक्षा और सच्ची कदर करने के लिए जहां अपने प्रत्येक सुख और मान बड़ाई आदि के प्रलोभनों से ऊपर रह कर अपनी प्रतिज्ञाओं पर आरूढ़ रहें, वहाँ अपने श्रेष्ठ अधिकार और उसके दाता परम पूज्नीय भगवान देवात्मा का शुभ सम्वाद अपनी सन्तान, अपने माता पिता, अपने भाई बहनों, मित्रों आदि तक पहुंचाकर और उनमें से जिन जिन के लिए संभव हो, उन्हें भगवान देवात्मा का सेवक बनाकर उन्हें भी उक्त अमूल्य लाभों में भागी बनाएं और अपने परम गुरू भगवान देवात्मा के परम हितकर कार्य को फैलाकर उनकी महिमा महान करें।

ऐसे सेवक सेवकाओं को इन विशेष दिनों में अपना यह अति आवश्यक कर्त्तव्य बोध करके और उसे प्रतिज्ञाबद्ध होकर पूरा करने की आवश्यकता है, कि उन्हें भगवान देवात्मा की शरण में आकर जो अमूल्य आत्म ज्ञान पाने और आत्मिक कल्याण लाभ करने का महा सौभाग्य और श्रेष्ठ अधिकार प्राप्त हुआ है, क्या वह उस सौभाग्य में और अधिकारी जनों को भागी बनाकर उसे सफल और सार्थक नहीं करेंगे? क्या वह अपने सम्बन्ध में भगवान देवात्मा और अपने अन्य हितकारियों की कीमती मेहनतों को यूं ही निष्फल खो देने वाले प्रमाणित होंगे? और इस प्रकार अपनी महा हानि के भिन्न अपने परम हितकर्ता भगवान देवात्मा और अन्य हितकारियों के लिए आघातकारी प्रमाणित होंगे? या भगवान देवात्मा का शुभ सम्वाद अधिकारी जनों तक पहुँचाकर और उनकी महिमा को चारों ओर फैलाने में सेवाकारी बनकर अपने श्रेष्ठ अधिकार और भगवान देवात्मा एवं अन्य हितकारियों की कीमती परिश्रमों को सफल और सार्थक करेंगे।

यह अत्यन्त आवश्यक मालूम होता है, कि अपने इस श्रेष्ठ अधिकार और आवश्यक कर्त्तव्य को कुछ भी उपलब्ध करने वाले सेवक सेवका (वार्षिक पाठ और विचार के विशेष दिनों में) प्रतिज्ञा बद्ध होकर संग्राम करें और अन्य पहलुओं में अधिक से अधिक सेवाकारी होने के भिन्न सेवकोत्सव तक अपने साथी सेवकों की संख्या बढ़ाने का दिली भाव और उत्साह से यत्न करें ताकि उनका यह श्रेष्ठ अधिकार और आवश्यक कर्त्तव्य किसी हद तक सफल और पूरा हो सके।

नोट

इस अंक में हम अपने कुछ कीमती वा उच्च जीवन धारी धर्म सम्बन्धियों के जीवनों पर प्रकाश डाल रहे हैं कि जिनका जीवन सब साथी सेवकों के लिए अनुकर्णिय रहा है। वह हमारे सेवक दल के ऐसे मोती है जिनकी चमक से सेवक दल रोशन हुआ है। इनके जीवनों का अध्ययन अवश्य ही पाठकों को लाभ पहुंचाएगा वा गर्व से भरेगा।

सेवक उत्सव :- *9 जुलाई से 11 जुलाई तक सेवक उत्सव है। चण्डीगढ़ में यह उत्सव 18-डी धर्मशाला में मनाया जाएगा।*

एक ऋषि

(श्रेद्धय श्रीमान मेवा सिंह जी)

उच्च धर्म सम्बन्धियों के उपकारी रूप की याद सदा हमारा भला करती है। इस नारकीय दुनियां में जहां मिथ्या पाप का राज्य है, किसी भी मनुष्य आत्मा का मनुष्य सृष्टि के सरताज एक मात्र उपास्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा को पहचान लेना उसका बहुत बड़ा सौभाग्य है।

श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी कितने सौभाग्यवान थे कि जिन्होंने आज से लगभग एक सदी पहले परम पूजनीय भगवान देवात्मा को छोटी सी उमर में ही पहचानना शुरू किया और ढंग से आपने पूजनीय भगवान को पहचानने के साथ-साथ अपनी कुल ताकतें उनके पाक मिशन में भेंट कर दी। अपने जीवन की इस सफलता को प्राप्त करके इस दुनियां से विदा हुए। आप का हृदय किस क़दर धन्य! आपके श्रद्धेय माता पिता किस क़दर धन्य! आपका नगर किस प्रकार बार बार धन्य कहने के योग्य है। आपके विशेष उच्च रूप के सामने हृदय बार बार झुकता और कृतार्थ होता है।

मेरे बड़े सौभाग्य कि इस नाचीज़ को आपकी वर्तमानता में आपके चरणों में वास और आपके मुबारक दर्शन करने और आपके पवित्र उपदेश सुनने का कई वर्ष तक लगातार अधिकार प्राप्त रहा। आपके विशेष जीवन को अपनी आंखों से देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

आपको विरासत में निराली हार्दिक पूंजी प्राप्त हुई। जहां संसार में उच्च गुणों और उच्च भावों का अकाल पड़ा हुआ है, वहां आपके भीतर सुन्दरता का बोध, सफाई, तरतीब के अंगों से भरपूर, कर्त्तव्य बोध से विभूषित होना, हां श्रद्धा, शुक्रगुज़ारी और हमदर्दी की नायाब पूंजी के मालिक होना, आपके रुतबे को आम मनुष्यों से बहुत ऊंचा कर देता है। साधारण मनुष्य भी आपके जीवन के आगे झुकने के लिए मजबूर हो जाता है।

किसी ने भी आपको और आपके निवास स्थान को मैला नहीं देखा होगा। आप साफ, स्वच्छ और परिष्कृत अवस्था में रहते थे। जिस प्रकार अपने मुबारक हाथों से अपनी वस्तुओं की झाड़ पोंछ करते थे, जूतों की सफाई रखते थे, वह दृष्य हमारी आंखों से ओझल नहीं हो सकता, सदा आपके रूप की विशेषता दर्शाता रहेगा।

सुर ताल का बोध भी सुन्दर मात्रा में आपके भीतर वर्तमान था। उच्च लोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी के साथ मिलकर उच्च और सुरीले सुर में मस्ती से झूम झूम कर परम पूजनीय भगवान देवात्मा की महिमा के गीत गाना आपके उच्च जीवन की पवित्र याद बना रहेगा। आख़िर दम तक आप उच्च भावों से भरकर गीत गाते और उच्च मण्डल पैदा कर देते थे।

आप अपने ज़िम्मे के कामों को लगन और ज़िम्मेवारी से पूरा करने का यत्न करते थे, यह यत्न आपके जीवन के पाक दृश्यों को और मुखरित करते थे। बिमार और कमज़ोर होकर भी अपने ज़िम्मे की सभाओं को जिस भाव पूर्ण ढ़ंग से अदा करते, उसका ब्यान कठिन है। सदा समय से पहले ही वेदी पर विराजमान होते थे और सहायकारियों की सहायता के लिए प्रार्थना से दीनता की मूर्ति नज़र आते थे। आख़री महोत्सव की सभा बहुत कमज़ोर सेहत के बावजूद भी कमाल ढ़ग से पूरी की, वह सभा विशेष रूप से प्रभावित करने वाली थी।

आप श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी आदि उच्च

सात्विक भावों की विशेष दौलत के मालिक थे, इन भावों ने आपको सच्चे ऋषि का रूप दे दिया। आप यह रूप रखकर पूजनीय भगवान के मिशन के लिए सारी ज़िन्दगी वफादार ही नहीं रहे बल्कि उनके मिशन को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा कन्धा लगाया। आपका जीवन मिशन के लिए एक मजबूत स्तम्भ का काम करता था। मिशन के पवित्र मण्डल की आप शोभा थे, सैंकड़ों लोगों को आपके चरणों में बैठकर सच्ची राहत मिलती थी, खुशी और रोशनी मिलती थी।

आपके श्रद्धा भाव ने आपको परोपकार और वफादारी का जीवन दिया। आपने बहुत संयमी होकर और अपने उच्च बोधों के अनुसार आवश्यक ज़रूरतों के लिए खर्चा रखकर अपनी कुल नकदी उस समय 70 हज़ार रू० गुरु मिशन में भेंट कर दिए। सारी उमर लम्बे लम्बे दौरों पर जाकर टूट फूट कर प्रचार का काम करते रहे। बुढ़ापे में भी आप मीलों सामान उठाकर, पैदल चलकर प्रचार का काम करते रहे। कई बार पानी में से भी पैदल गुज़रना पड़ता, परन्तु कोई कठिनाई आपके कदमों को पीछे नहीं ले गई। कई कई घण्टे आत्माओं के भले के लिए सभा करवाते, संग्राम करते। अपनी श्रद्धा और दीनता के कारण साधारण से साधारण मनुष्य की भी बहुत सराहना कर जाते और उनकी सभाओं से लाभ उठा लेते। अपने पोतों से भी छोटी उमर वालों और अपने चरणों में प्रतिपालित होने वाले जनों को विशेष सन्मान के योग्य कहकर सम्बोधन करते। किसी प्रकार की माली सहायता उन्होंने न केवल समाज से नहीं ली, बल्कि अपना सब कुछ दिया और अपने सम्बन्धियों से भी मिशन के लिए दान ले लेते। विकासालय की पाक संस्था के लिए अपने सम्बन्धियों से अनाज, घी और लकड़ियां आदि दान में लेते रहे। राशन से भरे गड्डे जो आप मंगवाते, ऐसे दृश्य अब देखने को कहां मिलेंगे।

आपके भीतर कृतज्ञता के सुन्दर भाव की पूंजी बहुत अच्छी हालत में वर्तमान थी। कृतज्ञता के ब्यान के समय आपकी आंखों से पाक आंसु बहने लगते। कृतज्ञता के कीमती अंग को बहुत आवश्यक अनुभव करते थे। पूजनीय भगवान के उपकारों और उत्पीड़नों को बहुत गहरे तौर पर अनुभव करते थे। आप सभा में ही प्रश्न किया करते थे कि मैं या आप में से किसी ने भी परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सेवा में पहुंचकर पापी जनों के उद्धार का व्रत ग्रहण करने की प्रार्थना नहीं की थी, तो भी भगवान ने हमारा अथाह हित साधन किया, यह ब्यान करते हुए फूट फूट कर रो पड़ते थे। चारों जगतों के उपकारों को अनुभव करते थे। एक एक कृतज्ञता की गाथा सुनाते समय आपका दिल भर भर आता था। आप के मुंह से छोटी से छोटी सेवा के लिए भी धन्यवाद के शब्द फूट पड़ते थे। किसी ने कभी आपकी कोई सेवा धन्यवाद का शब्द पाए बिना नहीं की होगी।

उनके हमदर्द दिल का विशेष इज़हार होता था।

"कभी कुछ काम भी आया, किसी आफ़त रसीदा के, कभी दामन से पोंछे तूने, आंसु किसी आब दीदा के,"

आपने बहुत से लोगों की आर्थिक सहायता की। कितने परिवारों को खुशहाल बनाया। यदि कोई भी किसी की आर्थिक सहायता करता, तो आपको खुशी मिलती।

आप प्रचार विभाग के कई वर्षो तक इंचार्ज रहे। आपने सैंकड़ों आत्माओं तक कठिनाईयों में से गुज़रकर भी देवात्मा का सन्देश पहुंचाया। सारे भारत में फैले हुए सेवकों को अपने साधन की शुभ कामना में याद करते थे। एक एक बार आत्माओं के भले के लिए व्याकुल होकर ज़ार ज़ार बहते आंसुओं से यह भजन गाते :-

"आत्म हित से बेसुधों को, मैं जगाऊं किस

तरह, किस तरह फिक़र उनमें ज़िन्दगी का पैदा करूं,"

आप बेहद दीन आत्मा थे। दीनता की मूर्ति कहना अधिक उचित लगता है। दानी होकर भी दीन थे मैंने एक बार उनकी उपस्थिति में उनके सदगुणों को टूटे फूटे शब्दों में ब्यान करना आरम्भ किया, यह उनके परलोक गमन से कुछ महीने पहले की बात है, जब मैंने ब्यान बन्द किया तो स्वभाविक ही उपस्थित जन उनके चरणों में झुकने लगे, वह एक दम खड़े हो गए और फरमाने लगे, "मन आनम कि मन दामन" (मैं जो कुछ हूं मैं ही जानता हूं) मैं इस प्रकार प्रशंसा के योग्य नहीं हूं। आपका यह ब्यान सुनकर कई जन आंसु बहाने लगे।

आपका व्यवहार मीठा और कोमल था। कड़वापन और रुखेपन से आप रहित थे। रेशम की तरह आपके स्पर्श में मिठास, मधुरता, कोमलता और इकसारी भरी हुई थी। आपकी बोल बाणी से शायद ही कभी किसी को ठेस पहुंची हो।

बहुत सा धन रखकर भी एक सच्ची फक़ीराना ज़िन्दगी व्यतीत करना, सादा से सादा खद्दर के लिबास पर शाकर रहना अपनी मामूली ज़रूरतों को आप पूरा करना, अपने बर्तन तक आप साफ करना, कोई नौकर नहीं, कोई सेवादार नहीं, कोई झाड़ू सफाई वाला नहीं, सब काम अपने हाथ से करने का दृश्य दूसरों के दिलों पर गहरा असर डालता था। आप उन चन्द बर्ज़ुरग हस्तियों में से थे, जो बहुत बड़ी खानदानी और आर्थिक हैसीयत के मालिक थे। ऐसे जनों का पूजनीय भगवान के दर की पूरा जीवन सेवा करना पूजनीय भगवान की महिमा को महान करता है।

आपके भीतर बकायदगी का भाव भी बहुत अधिक था। बकायदा साधन, भजन, पाठ, विचार, व्यायाम और सेवा के लिए नियत समय था। आत्म निर्भर और आत्म सहाय की आप मूर्ति थे, बुजुर्ग और कमज़ोर होकर कपड़े धोते, निचोड़ न सकते, उसी प्रकार ही सूखना डाल देते थे। अपने लिए पानी की बाल्टी लेने स्वंय ही चल पड़ते। कोई प्रार्थना करके ले जावे तो अलग बात है। आपकी आख़री सेवा में भाग लेने का मुझे फख़र हासिल है। सख़्त कमज़ोरी और बिमारी में भी अपनी सहायता आप करने की इच्छा रखते थे। देहान्त से एक दिन पहले डाक्टर को फीस अपने हाथों से पकड़ाई। रात को सोते समय, पास सोने वालों के कष्ट का बहुत ध्यान रखते थे और फरमाते थे कि मैं ठीक हूँ, मेरे पास सोने की आवश्यकता नहीं। आख़री रात फरमाया कि मुझे अफसोस है कि मैं आपको एक रात और कष्ट दूंगा।

इस दुनियां से कूच करते समय आप खुश और प्रफुल्लित थे। मुझ तुच्छ को उन्होंने पकड़कर छाती से लगाया और बहुत प्यार किया, और भी जो कोई आया, उसके साथ भी ऐसा ही स्नेह किया।

श्रद्धेय श्रीमान जी मुझ तुच्छ में आपका रूप देखने की आंख नहीं थी। आप मेरे खानदान के बहुत बड़े उपकारी थे। आपकी पाक याद से भरकर श्रद्धा कृतज्ञता से आपके आगे झुक रहा हूं। हमारे गरीबखाने पर आपका पधारना, मोटे मोटे पदार्थो पर किफायत करना और खुशी खुशी समय गुजारना आपका हम पर बहुत बड़ा एहसान था। गिला शिकवा आप जानते नहीं थे, बहुत लम्बा समय आपने मेरे परिवारिक जनों की आत्मिक सेवा की है। इस सुन्दर दृश्य को सामने लाकर बार बार आपके चरणों में धन्यवाद करता हूं।

इस बात का रह रह कर अफसोस है कि आप की सेवा का बहुत बड़ा अवसर मिला, आप तो कोई सेवा देना ही नहीं चाहते थे, परन्तु जो भी अवसर आपने बख़्शा, वह नेअमत समझकर सफल करने का यत्न किया, फिर भी उसमें और उच्च भावों की जो आवश्यकता थी, उसकी कमी अवश्य रही होगी।

एक विशेष साथी सेवक

(प्रिंसीपल श्रीमान धर्मवीर जी)

आपका जीवन खूबीयों का हसीन मंजर था। शारीरिक, मानसिक और नैतिक सुन्दरता आपके रूप में रोशन थे।

आप एक ऋषि माता पिता की सन्तान थे। बेशक माता का बिछोड़ा तो बचपन में ही हो गया, परन्तु पिता की फरिशता सीरत गोद में आपको प्रतिपालित होने का अवसर मिला। बड़े होकर जहां उच्च शिक्षा ने आपके दिमाग को रोशन किया, वहां देवात्मा के जगत की तीन महान हस्तियों के सम्पर्क ने आपके व्यक्तित्व को हार्दिक पक्ष से भी चमका दिया। श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी, श्रद्धेय श्री कनल जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के महान जीवन की छाप उनके जीवन पर प्रत्यक्ष थी। पंजाब शिक्षा जगत में आपका विशेष स्थान बन गया था। चोटी के प्रिंसीपल समझे जाते थे। माहर तालीम तस्सवर किए जाते थे। पंजाब युनिवर्सिटी के सैनेट में उनको स्थान प्राप्त था। आपको एक बहुत खूबसूरत जिस्म प्राप्त था। आपका व्यक्तित्व देखने में आकर्षक था। आपका रंग साफ, कद लम्बा और स्वास्थ्य शरीर था। वह सेहत का अच्छा बोध रखते थे। 70 वर्ष के होकर भी 50 वर्ष के दिखाई देते थे। सैर, खुराक और परहेज़ सम्बन्धी बहुत आला होश रखते थे।

आपको बहुत अच्छा दिमाग प्राप्त था। उच्च शिक्षा के अध्ययन ने आपके दिमाग को विशेष रूप से रोशन कर दिया था। पुस्तकों के अध्ययन का बहुत शौक था। पढ़ना और पढ़ाना उनके जीवन का मिशन था, फिलासफी और विज्ञान और डाक्टरी की पुस्तकें बहुत पढ़ते थे। आपका ज्ञान बहुत विस्तृत था।

आप देवात्मा की फिलासफी के रोशन पंडित थे। एक एक शब्द की गहराई को विशेष रूप से अनुभव करते थे। बहुत अच्छे विचारशील थे, भिन्न भिन्न विषयों पर सोच विचार करते रहते थे।

आप एक आला दर्जे के लेखक के चिन्ह भी रखते थे। आपके लेख बहुत उच्च कोटि के होते थे। माता पिता और भाई बहन के सम्बन्ध में भी आपके लेख कमाल के होते थे। नेचर के रूप पर आपकी एक लेख माला रोशनी से भरपूर है, जो आपकी मान्सिक उत्तमता का सबूत है। महान विज्ञानियों को छोड़ इस विषय पर साधारण आदमी की तरफ से ऐसा लेख दुर्लभ है।

आपका सौभाग्य था कि आपको एक असाधारण पवित्र और उच्च जीवन संचारक वातावरण में प्रतिपालित होने का शुभ अवसर मिला, जिसने आपको कीमती गुणों की खान बना दिया। जिन्सी पवित्रता आपके जीवन का महान अंग था। आपका यह अंग निहायत काबले रशक था। आपने अपनी सारी जवानी नौजवान लड़कियों की शिक्षा सम्बन्धी सेवा में व्यतीत कर दी। सारी उमर कमाल पाक दामन रहे। आपकी पवित्रता एक उदाहरण थी। देव समाज का गौरव था, दूसरों की बेटियों और बहनों को अपनी पुत्रियों की तरह अनुभव करते थे।

भेड़ियों से भरी इस दुनियां में पवित्रता के ऐसे फरिशते कहां नसीब होते हैं। इस पक्ष में वह फख़्रे

कौम और फख़्रे वतन थे।

आप एक ऋषि बाप के भक्त और आज्ञाकारी सन्तान थे। आप पिता के उज्जवल, महान और उपकारी रूप को जिस गहराई से देखते थे, उसका अनुमान तक लगाना बहुत कठिन है। पिता के लिए गहरे प्यार, श्रद्धा, सत्कार, सेवा और त्याग की ज़ोरदार गंगा सदा उनके हृदय में बहती थी। पिता की याद के ख्याल मात्र से ही उनका सारा अस्तित्व झूम जाता था। अकीदत और श्रद्धा के पवित्र जल से आपकी अति खूबसूरत मोटी मोटी आंखें भर आती थी। उच्च भावों की अति गहरी महसूसात से उनके बदन का रोम रोम खड़ा हो जाता था। पिता के लिए प्यार और अकीदत का जलवा आपके किरदार से सदा फूट फूट पड़ता था। आप एक आधुनिक श्रवण कुमार थे। आपकी पिता भक्ति के शीशे में हज़ारों आवारा सरकश और एहसान फरामोक्ष बच्चों को अपनी घिनौनी सूरत दिखाकर शर्मसार करने के सामान मौजूद थे। जब कभी भी आप इस सम्बन्ध में कुछ ब्यान फरमाते तो अजीब अन्दाज में आपका मुख मण्डल रोशन हो उठता। विशेष तस्कीन की खुशी आपके हृदय पर नाच करने लगती जो दूसरों को बहुत प्रभावित करती थी।

श्रद्धा और अकीदत के बहुमूल्य और दुर्लभ भावों के बीज आपने विरासत में हासिल किए जो आला माहौल में विकसित होते गए। आप महान जीवनों के लिए बहुत श्रद्धा और सत्कार के भाव रखते थे। फ़िरोज़पुर में सन् 1957 के महोत्सव के उपरान्त उन्होंने खड़े होकर यादगारी शब्द कहे थे। "इस विशाल हाल में देवात्मा सत्गुरू की मनोहर छवि का शोभायमान होना और देव स्त्रोत और देव आरती का गान होना, जितना बड़ा सौभाग्य है, वह ब्यान से बाहर है।" उनके इज़हार ने जनता के दिलों को श्रद्धा से भर दिया।

आप अपने एक एक श्रद्धा भाजन के सामने, अपनी खुदी को बहुत कुछ मिटा देते थे। उनके सन्मान और इच्छाओं को कमाल दर्जे ख़्याल रखते थे। एक बार किसी ज़रूरी काम से वह श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के साथ चण्डीगढ़ आए। सफर के दिन भर के संग्राम के साथ श्रीमान जी थक कर चूर हो गए थे। आपने जहां श्रद्धेय श्रीमान जी के आराम और सहूलियत का ध्यान रखा, वहाँ एक चिलमची में स्वंय गर्म पानी करके उनके स्वंय चरण धोने का सौभाग्य प्राप्त किया। आपकी उमर उस समय लगभग 60 वर्ष की थी। विकासालय की एक सभा में जब श्रद्धेय श्रीमान जी ने इस सेवा प्राप्ति की सराहना करके खुशी प्राप्त की, वहां प्रकाश करते करते आंखों से जारोकतार आंसू बहने लगे। उपस्थित जनों के दिल श्री धर्म वीर जी के प्रति गहरे सम्मान, रशक से भर गए। संसार ने कभी इस प्रकार की श्रद्धा से भरपूर प्रिंसीपल अभी देखने हैं।

हमदर्दी की दौलत आपने पूर्वजों से बहुत गहरी प्राप्त की थी। बिमारों, कमज़ोरों और बूढ़े लोगों के लिए यह वह हृदय की गहराई से प्रेरित होते थे। उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चुपचाप खुले दिल से तत्पर रहते थे। बहुत सारे बच्चों के जीवन बिना कुछ खर्चा लिए संवार दिए। कितने असहायों का सहारा बने, कितनी स्त्रियों को सुरक्षा प्रदान की, इस सब का अनुमान लगाना कठिन है। कुछ लोग आपके हमदर्दी भरे व्यवहारों को सामने लाकर उन्हें कबीर भक्त कहते थे। आप उच्च दर्जे के उदार थे। उदारता कूट कूट कर उनमें भरी हुई थी। बहुत सहनशील थे। खराब

से खराब जन के साथ भी निर्वाह कर सकते थे। कभी किसी को छोड़ना, निकाल देना या नौकरी से निकाल देना, वह जानते ही नहीं थे। एक बार जो आ गया, बस सदा के लिए टिक गया। आपके व्यवहार में बहुत लचक थी।

फर्ज़ और ज़िम्मेवारी के खूबसूरत अंगों से सुशोभित थे। सारा जीवन घोर संग्राम और मेहनत का जीवन था। कालिज के प्रति अपनी ज़िम्मेवारी के लिए खूब भाग दौड़ करते थे। पाकिस्तान के साथ लड़ाई के दिनों में फिरोज़पुर में गोलाबारी हो रही थी। सारा शहर खाली हो गया, कालिज में 2 - 4 को छोड़ कर कोई नहीं था, परन्तु आप वफादार सिपाही की तरह डटे रहे। दो बार माननीय देव समाज कौंसल ने अपने एक मैंबर को उन्हें वहां से लाने के लिए भेजा, परन्तु उन्होंने उनकी भी तसल्ली करवा दी और उन्हें खाली वापिस आना पड़ा। फर्ज की अदायगी तो कोई उनसे सीखे। इतने बड़े खतरे में भी अपना फर्ज़ निभाया कि कालिज के एक तीले तक की हानि नहीं होने दी, नहीं तो शायद ही वहां कुछ बचता।

फिरोज़पुर कालिज की भरपूर सेवा करके विशाल रूप दे दिया। आपने कई नई संस्थाओं को अपने संग्राम और दूरदर्शिता से जन्म दिया। दिल्ली नगर का नेहरु माडल स्कूल, चण्डीगढ़ का गर्लज़ सानियर सैंकडरी स्कूल और अन्य जायदादें बनाना उनकी सफल योजनाओं का ही फल है। विद्या सम्बन्धी संस्थाओं के सम्बन्ध में उनके अलग तरह के ही अरमान थे।

आप एक योग्य पुत्र, योग्य पति और योग्य पिता थे। पिता के देहान्त के उपरान्त उन्हें आधा लाख के करीब जो विरासत में मिला, वह सारा धन अपनी सौतीली माता को सौंप दिया। वह माता अपने इकलौते सौतेले पुत्र के प्रति सदा गर्व से भरी रहती थी। मां की थोड़ी सी भी तकलीफ उनको गहराई तक चोट करती थी और उन्हें हिला देती थी।

आपकी नेक पत्नी को सदा आप जैसे उच्च और योग्य पति के साथ का सौभाग्य अनुभव होता रहा। वह अपने इस सम्बन्ध पर पाक फख़र करती थी।

आप के ज्येष्ठ पुत्र को सदा यह गिला रहा कि पापा मेरे भेंट में भेजे हुए कुछ डालरों के डराफट को झाड़ कर फैंक देते थे। वह सदा यह कहते कि मैंने बच्चों के विकास के लिए सेवा की है, न कि उन्हें निजी सहायता का साधन बनाने के लिए।

आपका व्यक्तित्व बहुत आकर्षणीय था। आप मानवता के ऊंचे इन्सानों की कतार में से थे। देव समाज का कई अंगों में आप गौरव थे। मुरु जगत की आप विशेष शोभा और रौनक थे।

शुभ संग्राम

डब - वाली मन्दिर में पिछले दिनों डाक्टर मनसा सिंह जी पदमपुर से कोई 11 - 12 दिन ठहरकर सेवाकारी हुए। मन्दिर की सफाई पौधे लगाने और टंकी का सिस्टम ठीक करवाने की सेवा की। कुछ सभाएं भी करवाई कुछ नौजवानों को गुरु के निकट लाने का भी संग्राम किया। श्रीमान जागीर सिंह जी ने भी 3 दिन ठहिरकर सेवा की। मास्टर हंस राज जी हमेशा वहां ठहरकर सेवाकारी हो रहे हैं।

सुन्दर साध्वी

किसी सच्चे गुणवान व्यक्ति का परिचय पाना, ऐसे व्यक्ति के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करना, ऐसे सुन्दर जीवन को निकट से, हृदय की आंखों से निहारना मनुष्य का सब से बड़ा सौभाग्य है।

जैसे मोती हंसों के लिए चोगा बनते हैं, वैसे ही गुणवान व्यक्तियों की सुन्दरता हमारी नेकी की खुराक बनकर हमारे आन्तरिक जीवन को उभारती है। मेरे जीवन में श्रद्धा की खुराक बनने वाला एक अति सुन्दर साध्वी का गुणों से भरपूर जीवन रहा है, जिसके गुणों की सुन्दरता के आगे झुक झुक कर मेरा बार बार भला हुआ है। उसके गुणों का आज मैं पाठकों के साथ गुणगान करने की पवित्र खुशी प्राप्त कर रहा हूं।

शरीर की और विशेष रूप से मुख की सुन्दरता किसी किसी जन को विरासत में प्राप्त होती है और उसकी चमक बादलों में से बिजली की तरह निखर पड़ती है। चेहरे के यूसफ तो फिर भी देखने को मिल जाते हैं, पर ऐसे यूसफी चेहरे अति नायाब होते हैं, तो यूसफी सुन्दर दिलों के भी मालिक हों। यह कश्मीरी सुन्दरता की मूर्ति देवी यूसफों जैसा सुन्दर दिल भी रखती थी, यह इनमें निरालापन था।

पहली बार इस देवी के दर्शन लगभग 55 वर्ष से भी अधिक पहले एक आश्रम के रसोई घर में हुए थे, जब उनकी उमर 20 वर्ष के लगभग होगी। यह अत्यन्त सुन्दर कन्या पाकिस्तान से दुखों दर्दो के पहाड़ चीर कर किसी प्रकार भारत पहुंची थी और कुछ समय बाद ही उन्होंने देव समाज के एक आश्रम में आश्रय ले लिया और उस वातावरण में ही अपनी इज्ज़त की रक्षा के सामान देखकर उस आश्रम को और देव समाज को जीवन का ठिकाना जानकर सदा के लिए अपना लिया।

यह देवी बिल्कुल अनपढ़ थी। शर्म झिझक की मूर्ति थी। चुप रहना उनके स्वभाव में था। खामोशी से सेवा करती रहती, आत्मा को जाग्रत करने वाली सभाओं में योगदान देती, परन्तु एक शब्द भी मुंह से जैसे नहीं बोलती थी। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे भीष्म और तपस्वी ऐसी देवियों के रक्षक थे, जिनकी छत्रछाया में वह निश्चिन्त जीवन के दिन बिता रही थी।

इस देवी की योग्यता बढ़ाने के लिए उनको पढ़ाना शुरू किया गया, अच्छा दिमाग था, हिन्दी अच्छी प्रकार लिखने और पढ़ने लग गई। यूनिवर्सिटी की रतन की परीक्षा पास की ली और इससे बढ़कर सांसारिक डिगरियों के लिए उनका मन नहीं ललचाया। देव समाज के महान कर्मचारियों की सभाएं सुन सुन कर इस देवी की भीतर का जीवन निर्मल होता गया और चन्द वर्षो में ही वह भोली भाली सुन्दर बालिका ने एक गंभीर साध्वी और गुरु मिशन की प्रचारिका का रूप ध ार लिया। कई वर्षो के बाद अपने सौभाग्य को अनुभव करते हुए जब एक सभा में पहली बार वह अपने हृदय की गहराई से धन्यवाद के भावों से भरकर बोली तो उस सभा में मैं हाजिर था, मैं भी और लोगों की तरह हैरानी से भर रहा था कि सदा चुप रहने वाली कन्या आज

किस प्रकार बोल रही है और किस प्रकार गुरु महाराज और उच्च कर्मचारियों को धन्यवाद दे रही है। ऐसा ब्यान बड़े बड़े पढ़े लिखे भी नहीं कर सकते। उनके ब्यान को सुनकर एक बुर्जुग पुकार रहे थे कि शेर का शिकार हुआ है, जो यह कन्या अपनी चुप्पी तोड़कर इस प्रकार सुन्दर बोलने के योग्य हो गई है। गुरु संगत का जादू उनमें बोल रहा था।

देव समाज के विशेष वातावरण ने इस सफेद मिट्टी के बुत में नई जान संचार कर दी और ऐसी रोशनी भर दी कि उसकी धरती पर बोझ ज़िन्दगी बरकतों की पुंज बनकर चमक उठी, जो एक अबला के रूप में देव समाज की शरण में आई थी, वह देव समाज में एक विशेष देवी बनकर दूसरों के भले के लिए निस्सार होने लगी। उनकी योग्यता इतनी निख़र गई कि वह एक योग्य प्रचारिका, बहुत प्रभावशाली तक़रीर करने वाली बहुत सरगर्म वर्कर, और दूसरों की सेवा में सर्वस्व निछावर करने वाली फरिश्तों की कतार में आ खड़ी हुई।

ऐसी नेक और हसीन लड़की के लिए सांसारिकता में बहुत अच्छा स्थान मिल सकता था, उन्होंने कभी दुनियादारी की ज़िन्दगी के प्रति आर्कषण अनुभव नहीं किया। दुनिया परस्ती पर लात मारकर एक सच्ची साध्वी का जीवन बिताया। जवानी में नीच सुखों के आकर्षण मनुष्य को बर्बाद कर देते हैं और किए कराए पर पानी फेर देते हैं, परन्तु इस देवी ने नीच प्रलोभनों से सदा बचकर एक तुच्छ साध्वी का जीवन बसर करने का पक्का निश्चय कर लिया। 30 - 32 वर्ष तक कमाल की वफादारी से निभाया। इस देवी का सांसारिकता की दलदल में से इस प्रकार इतना ऊंचा उठने की तस्वीर जब मन की आंखों के सामने आ जाती है तो श्रद्धा से सिर उनके चरणों में सजदा हो जाता है और जुबान से धन्य धन्य पुकारने के लिए इस तप के आगे मजबूर हो जाता हूं। तन के नीच सुखों की गुलामी बड़े बड़े चतुर मनुष्यों की मिट्टी पलीत कर देती है और उनकी हस्ती का जलूस निकाल देती है, आप इस गुलामी से बहुत मुक्त थी। पवित्रता आपके महान जीवन का सुन्दर और कीमती भूषण रहा है। पवित्रता की नायाब बरकत आपको प्राप्त थी। तन सुख अनुराग ने आपको कभी पागल नहीं होने दिया। बहुत सीमा तक आपने शूरवीरों की तरह इस पर फतह प्राप्त की। किसी मनुष्य को अपने दिल दिमाग में गहरा नहीं बसाया। किसी मनुष्य की निरन्तर निकटता को प्रोत्साहित नहीं किया। पुरूषों में रहकर, उनके साथ काम करके, ऐसी कमज़ोरी का कभी शिकार नहीं हुई। आपका यह पहलू पहाड़ों की शिख़रों को छूने जैसा महान दिखाई देता है। आपके पवित्र रूप के आगे सजदा करके मैं पवित्रता का पाठ पढ़ने का यत्न कर ता रहा हूं। आपका जीवन पवित्रता का चश्मा है। यह और अधिकारियों को पवित्रता बांटता है।

धन पदार्थो के बन्धन से आज आजाद थी। धन आदि का आपको कोई प्रेम नहीं था। लाखों, करोड़ों मनुष्यों से जिनमें धन के प्रेम का भूत होता है, आप कहीं श्रेष्ठ थी, आपको अपने अधिकार के तौर पर हज़ारों रूपये अचानक प्राप्त हो गए। आपने उनको छूना तक भी जैसे पसन्द नहीं किया। आपके पास पहले भी कोई धन राशि नहीं थी। आपके पिता और भाई वर्तमान नहीं थे। आपको वह रकम न अपने लिए रखने का और न ही अपने सम्बन्धियों के लिए रखने

का ख़्याल तक आया। झट यह हज़ारों की रकम समाज को सौंपकर आपने सच्ची सन्तुष्टि अनुभव की। एक बार रकम देकर फिर कभी उसको याद नहीं किया। एक सपने की तरह उस समय के हज़ारों रु० के दान को आपने विसार दिया। कभी यह कहते नहीं सुना, हाय ! मेरा रुपया, या कभी दान की डींग नहीं मारी, यह आपके उदार हृदय के लिए सम्भव ही नहीं था। आपकी कमाल दर्जे की उदारता और धन के प्रति कमाल का वैराग्य आपके हृदय को अनोखी सुन्दरता प्रदान करता था और जिसने आपको करोड़ों इन्सानों से ऊंचा निखार दिया। ऐसा त्यागी, लोभ लालच से मुक्त, दानी और दीन हृदय फरिशतों को ही नसीब होता है।

स्त्रियों को साधारणत: खाने पीने की ललक होती है। वह मीठी और चटपटी चीजों के खाने की शौकीन होती हैं। आप ऐसी किसी लालसा की शौकीन नहीं थी। रुखा सूखा खा कर तसल्ली में रहती थी। बहुत थोड़ा और सादा भोजन आपकी आदत में शुमार हो गया था।

कपड़े या पोशाकें पहनने का शौक नहीं था। सादा दो चार पोशाकें या धोतीएं ही आपकी पोशाकों का भंडार था। सादे कपड़े भी उनकी शोभा को बढ़ा देते थे और उन्हें जेवरों का कोई आर्कषण नहीं था। बड़ी सुगमता से वह इन प्रलोभनों से ऊपर उठ गई थी। ऐसे और पदार्थो की धूलि भी वह अपने ऊपर नहीं पड़ने देती थी।

श्रद्धा, पवित्रता, हमदर्दी, कृतज्ञता का आपका जीवन मुंह बोलती तस्वीर था। जब कभी कोई स्त्री बिमार होती, उसकी सेवा के लिए रहमत के फरिशते का रूप धारण कर लेती। पी. जी. आई जैसे बड़े हस्पतालों में वह कई महीने उच्च दर्जे की नर्सो की तरह सेवा करती। अपने मरीज की नहीं, उल्टा वह और मरीज़ों की सेवा करने के लिए बेबस हो जाती। नर्सो का काम करती। नर्से उनकी सहेलियां बन जाती। मरीज़ों की सेवा में उन्हें इतना रस आता था कि कई बार वह कहती कि यदि समाज आज्ञा दे तो मैं हस्पतालों में मरीजों की सेवा करते करते अपना जीवन दे दूं। जान तोड़कर रात दिन बेग़ाने मरीजों की सेवा करती, यह दृश्य देखने के योग्य होता था। वह रहमत की देवी का साकार रूप उस समय बन जाती थी। स्त्रियों को अपनी बिमारी के समय सेवा की आफर वह करती रहती। फिर चाव भाव से वह सेवा करके धन्य धन्य हो जाती थी।

आप फरिशतों की तरह ही निर्मल और निष्कपट थी। सीधा साधा आपका स्वभाव, कोई छल कपट नहीं, बड़ा कमाल का कोमल और सुन्दर जीवन था।

अहं का भाव आम मनुष्यों की तरह उन्हें भी मिला था। इस कारण जब कभी उन्हें कुछ गुस्सा आता और किसी के प्रति कुछ घृणा पैदा हो जाती, परन्तु यह घृणा अस्थाई होती थी, गहरी घृणा, जो द्वेष का रूप धारण करले यह आपके भीतर नहीं थी।

श्रद्धा से भरकर गुरु महाराज के कार्य में सारी उमर लगा दी। उनकी तकरीर, उनके भजन विशेष प्रभाव रखते थे। एक एक गांव में नगर कीर्तन करती, बिमार होकर भी गले में हारमोनयम डाल कर भजन गाते हुए प्रभाव फेरियां करती, यह पवित्र दृश्य देखने योग्य होता था। श्रद्धा भाव ने ही आपको गुरु महाराज के लिए कुर्बान होने के लिए मजबूर किया। श्रद्धा भाव ने ही स्थिरता बख्शी। वफा का ताज पहनने के योग्य हुई, तिल तिल अपना गुरु पर कुर्बान कर दिया।

धर्म के भावों ने आपको दुनियावी सामानों की तरह दुनियावी सम्बन्धियों से भी वैरागी बना दिया। आप दुनियावी सम्बन्धियों के लिए कोई कड़ा बन्धन नहीं रखती थी। इस प्रकार की कमज़ोरी का उनका जीवन कभी शिकार नहीं हुआ। मोह के भारी बन्धन मनुष्य का मुरदा वीरान कर देते हैं, परन्तु वह उनसे बहुत ऊपर थी।

आपका जीवन उच्च भावों की सुन्दर महक से भरपूर था। मनुष्य आम करके सडांद का टोकरा ही होता है। परन्तु आपका जीवन निराले सतगुरु के प्रभावों को पाकर महकदार बन गया। ऐसे महक भरे जीवन को देखना और उसकी महक से प्रभावित होना और नीचता की दुर्गन्ध को छोड़ कर सुगन्ध को अपनाना किसी मनुष्य का बहुत बड़ा अधिकार है।

आज कल के साथी सेवकों के सम्बन्ध में पवित्र दिनों में ऐसी अन्दर और बाहर से अति सुन्दर साध्वी के पाक जीवन की पाक महक याद करके हम अपने कठोर हृदयों को सरस करने का सौभाग्य पाने की खुशी प्राप्त करके धन्य धन्य हो सकें और इस फख़र के साथ कि सत्गुरु ने ऐसे अनमोल हीरे धर्म सम्बन्धियों का दान हमें दिया है, उन्हें धन्यवाद दे सकें। उनके कदमों में लाख लाख बार सजदा करने के लिए इच्छुक हो सकें।

शुभ संग्राम :- चण्डीगढ़ में हर इतवार को श्रीमान बलदेव सिंह जी सभा करवाते रहे हैं, जिसमें अच्छी संख्या में लोग आकर लाभ उठाते हैं।

आज का सबसे बड़ा रतन

पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव विकासक्रम की इस युग की सबसे महानतम, विचित्र, अद्भुत, हितकर और चौंकाने वाली घटना है। उनसे परिचित होना, उनके साथ सम्बन्ध होना मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य है और उनसे ग़ाफिल उदासीन होना सबसे बड़ा घाटा और पाप है। देवात्मा का मनुष्यों से अन्तर योग्यताओं का ही अन्तर नहीं, बल्कि श्रेणी का अन्तर है, उनको देखना और पहचानना कोई सुगम बात नहीं, संसार ने तो उनको क्या पहचानना था, अब तक हम समाज वालों ने भी उनको नहीं या बहुत ही थोड़ा, नाममात्र पहचाना है।

कनल परिवार वह विशेष और महा सौभाग्यवान परिवार है, जिसने देव आत्मा जैसी अद्भुत हस्ती को किसी अंश तक पहचाना है और उनके **अद्वितीय** अति महान देव यज्ञ में अपनी बहुत आहुति डाली है। काका जी (श्रीमान सत्यवान जी कनल) के श्रद्धेय पिता बाबा जी देवात्मा की शिक्षा के महान पंडित थे। उनकी रचना **'देव आत्मा, लाईफ ऐंड टीचींगस'** ने उनको समाज के इतिहास में अमर कर दिया है। उनकी लेखनी से निकले हुए लेख और पुस्तकें बहुत ही निराला और कीमती खज़ाना है। बाबा जी की दूसरी सबसे उत्तम और महान भेंट श्री काका जी थे।

मनुष्य बड़ा ही अभागा है। पहले हम ने अपने ईष्ट देव को, अपने परित्राता को इस धुन के साथ

विदा किया, "हमने तुमको नहीं पहचाना, हमने तुमको नहीं पहचाना" अब हम बहुत ही बदनसीब और कंगाल हैं कि हमने काका जी को भी वह सम्मान नहीं दिया, उसका कुछ अंश भी नहीं दिया, जिसके वह अधिकारी थे। बल्कि हमने तो बहुत कुछ इसके उल्ट किया। सुनी सुनाई बातों से हम उनको पहचानने के सम्बन्ध में बहुत गुमराह और भटके रहे हैं।

मेरी कई वर्षो से ज़ोरदार आरज़ू थी कि सारा समाज मिलकर एक विशेष सन्मान समारोह करे और उनको उनकी इस दुनियां में वर्तमानता में गहरे दिली भावों से सत्कार भरे गीतों से सम्मानित करके, अपना बहुत बड़ा फर्ज पूरा करे, शोक कि दिल की बातें दिल में रह गई, कोई पेश नहीं गई।

दिल्ली यूनिवर्सिटी, जो उनकी साधना का मरकज़ था, ने उनके विद्यार्थियों और साथी प्रोफैसरों ने एक विशेष समारोह करके उन्हें विशेष सम्मान दिया, वह बड़ा ही सुन्दर दृश्य था, जब उच्च पदस्थ उनके किसी समय के विद्यार्थी, उनका सजदा करते थे। यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर साहिब ने उनके लिए विशेष सम्मान और प्रशंसा दर्शा कर विशेष खुशी प्राप्त की। यह समारोह एक विशेष समारोह था।

शोक और महाशोक हमने वह अवसर भी अपनी संगदिली से खो दिया। 570-डबल स्टोरी, न्यू रजिन्द्रा नगर का चांद सदा के लिए लोप हो गया, 570-डबल स्टोरी एक सूनी झोपड़ी रह गई, केवल उनकी यादें रह गई।

मेरे लिए सदा ही काका जी को देखना, उनको मिलने का अवसर पाना, उनको सुनना, उनकी रचनाओं को पढ़ना, एक बड़ा सौभाग्य और एक honour (सम्मान) का अनुभव था। 50 वर्षो से मुझे उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त था। उनका एक एक शब्द मेरे लिए बहुत कीमती रहा है। उनके बहुत से पत्र मेरी कीमती पूंजी थे।

काका जी अपने श्रद्धेय पिता जी की तरह देवात्मा की फिलास्फी के विशेष पंडित थे। उन्होंने देवात्मा की सारी शिक्षा को सारी उमर जांचा हैं और अंग्रजी भाषा में विशेष रचनाओं का दान बख़्शा है। देवात्मा के दर्शन पर लिखना, आपका विशेष इश्क था। Ethics of Dev Atma, Introduction to Dev Dharma, Why to be good, आदि आपकी विशेष देन है। आपने लगभग 30 वर्ष तक महोत्सव पर विशेष विद्वतापूर्ण, ठोस और नये विषयों पर लैक्चर दिए, जिनको दर्शक विशेष रूप से सुनने के लिए एकत्रित होते थे। यह लैक्चर बाद में अंग्रेजी और हिन्दी के बहुत सुन्दर पैम्फलेटों का रूप धारण कर गए। आपकी हिन्दी रचनाएं **'देवात्मा का परिचय', 'देव धर्म का परिचय'** भी असाधारण रचनाएं है। आपने पूजनीय देव शास्त्रों के चारों भागों का, जो देवात्मा के अपूर्व ग्रन्थ हैं, अंग्रेजी में अनुवाद किया। आपने भिन्न-भिन्न सम्बन्धों में बहुत ही शानदार ट्रेक्ट लिखे।

आपको देवात्मा के दर्शन पर लिखना, उनको पुस्तकों का आकार देना और उनको विश्व भर की प्रसिद्ध लाईब्रेरियों में पहुंचाना, तीनों काम अति प्यारे थे। आपने अपनी इस लगन की पूर्ति के लिए अपने पास से ढेरों रुपये खर्च करके सन्तुष्टि प्राप्त की।

आपने समाज की अंग्रेजी मासिक पत्रिका को उच्च योग्यता से 44 वर्ष तक बड़ी उत्तमता से एडिट किया। सीता के स्वंयवर की धुन की तरह, अब कोई माई का लाल भी इस पत्रिका की ज़िम्मेवारी की कलम

को कैसे उठा सकेगा। शायद सदियों पीछे कोई, ऐसा लेखक पैदा हो सके।

आपने अपने श्रद्धेय पिता जी के लेखों को, जो एक सैलाब थे, कई पुस्तकों का आकार दिया। **'Married Life'** को अंग्रेजी में छापकर गृहस्थ जीवन के लिए बहु कीमती सौगात बना दिया, जिसके पाठ से शादीशुदा जोड़े सारी उमर लाभ उठाते रहे। इस महान पुस्तक ने कई घर उजड़ने और बिखरने से बचा लिए। इस पुस्तक का हिन्दी और पंजाबी में भी अनुवाद छापा है। **'Altruism'** लेख माला के सैंकडों लेखों को 10 - 12 पुस्तकों के सुन्दर रूप में और फिर एक सुन्दर ग्रन्थ बनाया है। इसके हिन्दी और पंजाबी अनुवाद करवाकर छपाए हैं। **'What Dev Dharma can offer you'** का सुन्दर ट्रैक्ट अपना विशेष स्थान रखता है। इसको हिन्दी में भी छापा है। रूस में भी **'Dev Atma'** एक दार्शनिक की ओर से लेख छपाने में आप कारण बने हैं। **"Prospectives of Dev Atma'** पुस्तक में देश विदेश के विख्यात दार्शनिकों से लेख लेकर छपवाए हैं।

आपने देव धर्म साहित्य के लाईफ मैंबर बनाए जो आजीवन हर पत्रिका और हर नई छपने वाली पुस्तक के अधिकारी थे। वह क्रम आज तक भी चलता रहा है।

देवात्मा गुरु के दर्शन के साहित्य की रचना और प्रसारण का इश्क आपकी हड्डियों में रच गया था। आपने जो कुछ इस पक्ष में सोचा और किया, उस विचार को शब्दों में बांधना अति कठिन है।

श्री काका जी साधारण देव समाजी नहीं थे। वह देव समाज के विशिष्ट नेता थे। अडोल स्तम्भ थे। उन्होंने देव धर्म को जीआ है। वह सेवक का सच्चा स्वरूप बने, देवात्मा ने सम्बन्ध तत्व की निराली शिक्षा दी है, उन्होंने बताया है कि जीवन सम्बन्धों में हैं। भिन्न-भिन्न सम्बन्धों में हमारा व्यवहार ही हमारा परिचय है। हमारा व्यवहार ही हमारा प्रकृत धर्म है। हमारे व्यवहार ही हमारे धर्म का परिचय हैं।

काका जी ने सम्बन्ध तत्व को अपने जीवन में उतारा, और सम्बन्ध तत्व को जी कर दिखाया है। काका जी एक श्रवण कुमार पुत्र थे। उनके माता पिता का शब्द मात्र उनकी आंखों से आंसू गिरने के लिए काफी होता था। उनके माता पिता जी के देहान्त पर मैंने उनके भाव सुने हैं, वह दर्द भरे, वह श्रद्धा भरे नाले आज तक मेरे दिल पर अंकित हैं। अपने रचनाकर्ताओं की महान छवियां वह अपने सिर ऊपर शोभायामान रखते थे। वह एक प्यार और शराफत की मूर्ति पिता थे। आप शानदार पति थे। बहन, भाईयों के लिए अति प्यारे, पिता मां का प्यार देने वाले बड़े भाई थे। कमाल के अध्यापक थे, जिनका विद्यार्थी होना बड़ा फख़्र माना जाता था। महान अफसर और अपने नौकरों के लिए प्यार और दया भरा दिल रखते थे। वह कमाल के देश भक्त थे। एक सुन्दर पड़ोसी थे। एक बेहद ऊँचे और कमाल के इन्सान थे। जैसे पहले लिखा है काका जी ने देव दर्शन जीआ है। अपने भिन्न-भिन्न सम्बन्धों में 10 बड़े ही उत्तम और सुन्दर पैम्फलेट लिखे और छापे हैं। माता पिता के प्रति, सन्तान के प्रति, बहन भाईयों के प्रति, पशुओं के प्रति, पौधों के प्रति आदि आदि।

इनका एक एक शब्द काका जी की सोच और भावना का स्वरूप है। उन्होंने उच्च भावनाओं के महान स्तर को छुआ है। इसको पढ़कर पाठक अपने आपको बौना समझने और देखने के लिए मजबूर हो

जाते हैं।

यह पैम्फलेट काका जी के आंतरिक जीवन का चित्रण है। सही अर्थो में यह काका जी की उत्तम Auto Biography है।

सात्विक भाव मनुष्यता को आम स्तर से ऊंचा बना देते हैं। आपके भीतर दया, श्रद्धा, कृतज्ञता के भाव बड़ी सुन्दरता से वर्तमान थे। आप एक सात्विक महान पुरुष थे। सात्विकता और परोपकार दोनों इकट्ठे चलते थे। आपके उच्च सात्विक जीवन में सदा परोपकार का प्रवाह जारी रहा है, जो दिल वालों को सदा उनके चरणों में सजदा करने के लिए मजबूर करता रहेगा।

दिल्ली के स्कूल आपकी सात्विकता का माध्यम थे। खूनदान के कैंप लगाना, कमज़ोर वर्ग के बच्चों को पढ़ाकर कुछ न कुछ बना देना, पढ़ाई के लिए बच्चों को सदा धन और वजीफे देना, अपने घर बुलाकर गरीब बच्चों को पढ़ाना, सदा दूसरों के लिए कुछ करके तृप्त होना आपका शौक था। नये कालिजों की दिल खोलकर सहायता करना, कई विद्या की संस्थाओं के बनने पर खुश होना आपकी विरासत थी। दिल्ली के स्कूल एक ऋषि के आश्रम थे, जहां अध्यापक झुग्गी झोपड़ी वालों के लिए सेवाकारी होने के लिए तैयार रहते थे। जहां झुग्गी झोंपड़ी वालों के लिए अच्छे खानों का प्रबन्ध किया जाता था। बच्चों के लिए वस्त्र और बिस्तरों का वितरण होता था। उनकी पढ़ाई की बसों में भी कलासें लगाने का प्रबन्ध होता था। जहां वह स्वंय और टीचर भी उन गरीब बच्चों को adopt करते थे, और एक एक बच्चे की उन्नति कर ज़िम्मेवारी विशेष खुशी के साथ उठाते थे। वाह ! क्या प्यार बांटने और प्यार से सहकारी होने का उस ऋषि आश्रम में वातावरण था। शोक और महा शोक ! अब उस चमन का माली, उस आश्रम का ऋषि अपनी यात्रा पूर्ण करके लोप हो गया। गरीबों का दर्दमन्द, झुग्गी झोंपड़ी वालों का मसीहा चला गया। उस चमन का अब क्या होगा, यह नेचर ही जानती है।

बाबा जी से लेकर आज तक आपका घर एक सदा व्रत लंगर था। वहां हर आने वाले को सिर पर बिठाकर निवाज़ा जाता था। चाव भाव से उसकी सेवा होती थी और इसमें विशेष खुशी प्राप्त की जाती थी।

आप एक आदर्श पुरुष थे, आदर्श ही आपने वसीयत की है। आपने अपनी पूरी मृत देह A.I.M.S. All India Sciene Medical Institute को दान दे दी। आपकी नेक धर्म पत्नी ने, आपके बच्चों ने भी इसका पूरा साथ दिया। यह विद्यार्थियों के प्रति आपके प्यार का शिखर था। कितनी अलौकिक सोच और कैसा अलौकिक जज़बा !! ऐसे जज़बे को लाखों प्रणाम। आपने किसी प्रकार की श्रद्धांजलि को भी अपनी ओर से बेअर्थ कर दिया।

स्वार्थ अनुराग जीवन का नाशक है। स्वार्थ मनुष्य के भीतर एक शत्रु है, कोढ़ है। इससे मुक्त होना या कुछ भी ऊपर होना, यह विरले महां पुरुषों के ही हिस्से आता है। सात्विकता और स्वार्थ कभी साथ साथ नहीं रहते। काका जी की गहरी सात्विकता ने उनको स्वार्थ से बहुत ऊपर कर दिया था। वह अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए, गुरु मिशन के लिए जीए। वह जीवन सफल कर गए। आपके श्रद्धेय पिता जी कहा करते थे। "Life lived for other is life indeed, life lived for self is a barren waste." स्वार्थ अनुराग से धन अनुराग, पदार्थ अनुराग का आना आवश्यक है। आप स्वार्थ अनुराग से ऊपर होकर, धन अनुराग,

सम्पत्ति वा पदार्थ अनुराग से मुक्त हो गए थे। न श्रद्धेय कनल जी के भीतर धन अनुराग आया, उन्होंने एक बादशाह फकीर का जीवन अपनाया और न ही आपके भीतर यह सांसारिकता का कोढ़ आया। आप इससे मुक्त रहे, जो अरबों में से किसी को यह अधिकार मिलता है। वह कहा करते थे, "Blessed should share with less fortunate."

दिल्ली में आपका एक मकान था, जो आज कई करोड़ का था। उसको बेचने के लिए आपकी शर्त यह थी कि मैंने इसके लिए White Money लेकर ही बेचना है, उस समय आपको उसके लाखों रुपये मिल सकते थे, पर आपने इस प्रलोभन पर थूका तक नहीं, चन्द लाख रुपयों में ही वह प्लाट देकर आप बेफ्रिक हो गए। दिन दिहाड़े हमारे सन्मुख कितनी महान उदाहरण। ऐसी हस्ती के आगे सिर न झुके तो किसके आगे झुके?

मुझ तुच्छ पर भी उन्होंने सदा मेहरबानियों की बारिश की है। आप मेरे बहुत बड़े इकलौते प्रशंसक रहे हो। मेरे सम्बन्ध में बेबाक होकर बोलते थे और लिखते थे। उनकी ओर से प्रशंसा के दो शब्द भी मुझे संसार की ओर से अपमान सहने के लिए तैयार कर देते थे। मुझे उनका अज़ीज़ होने और कहलाने का बहुत गर्व है। आप मेरे साथ हुई किसी भी ज़्यादती को सदा अनुभव करते थे।

आपका जीवन एक बहुत बड़े रतन का जीवन था। आप आज की समाज के इस युग के कोहीनूर थे।

मैं नेचर का लाख लाख शुक्रगुज़ार हूं कि उन्होंने मुझे श्रद्धेय कनल जी और काका जी दोनों को देखने, उनकी पुस्तकों का पाठक करने और काका जी के साथ गुरु मिशन में कुछ सेवाकारी होने का गौरव बख़्शा है। मुझे काका जी की निकटता हासिल रही है, उनका स्नेह हासिल रहा है, मुझे उनका अज़ीज होने का मान प्राप्त रहा था। यह मेरे लिए एक बड़े फख़्र की चीज़ है। इस अधिकार की याद ही मुझे चाव भाव से भर देती है और मेरा दिल खुशी से उछलने लगता है और नाचने लगता है और मैं लोगों को बता सकता हूं कि मैंने इस बड़े रतन को निकटता से निहारा है। सचमुच ही वह एक अति ऊँचे, नेक और महान इन्सान थे। देवात्मा की रोशनी में बेशक हर व्यक्ति, गल्ती का पक्ष भी रखता है, परन्तु फिर भी वह बहुत ऊँचे, सात्विक, महान, परोपकारी मनुष्य थे। ऐसे पुरुष कभी कभी पैदा होते हैं। वह अपने किरदार और लेखनी में सदा अमर रहेंगे।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

(पेज़ 2 का बाकी)

सरोज जी ने भी माता जी के संबंध में बड़े श्रद्धा भाव से अपने भावों को प्रकाश किया । उन्होंने कहा कि इनका सबसे बड़ा उपकार यह है कि उन्होंने हमें महाराज जी से जोड़ दिया व अब तक जोड़े रखा। वे बहुत कम बोलते हुए बहुत कुछ समझा देती थी व हमारा सारा घर जोड़ कर रखा। खास तौर पर हम देवरानी, जेठानी में कभी मनमुटाव आने नहीं दिया। हमेशा गुरू के दरबार से जुड़ने, सफाई रखने व घर से सबंधित बहुत सी शिक्षाओं पर जोर देती रहती थी। उनकी बहुत कमी महसूस होती है और शायद इसकी कमी कभी भी पूरी नहीं होगी।

मोना (पोती) – अम्मा जी, ने बहुत ज्यादा प्यार दिया है।

हमारे नतीजे आने पर बहुत खुश होती थी। उनमें बहुत सारे गुण थे जैसे सफाई पंसद, हर चीज़ तरतीब से रखना आदि हमारी उन्होंने बहुत सेवा की है विशेष कर मेरे बालों की। वे हमें कभी कभी गुस्सा भी करती थी परन्तु अब उनकी बहुत कमी महसूस होती है। उनके सम्बन्ध में की गई गल्तियों का अहसास है और उनके लिय क्षमाप्रार्थी हूँ।

श्री मान बलबहादुर सिंह जी- मुझे भी माता जी के पास जाने आने का, उनका स्नेह प्राप्त करने का उनके चरणों में बैठने का बहुत बार अवसर मिला, इसलिए मैं उन्हें काफी करीब से देख पाया । उनके परलोक गमन के बाद ही मुझे पता लगा कि वे अनपढ़ थी लेकिन उनके व्यवहार से कभी भी पता नहीं चला। वे हमेशा बहुत समझदारी व पढ़े लिखे जैसी ही बातें करते थी। बच्चों से उन्हें बहुत स्नेह था। उनके परिवारिक सदस्यों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि वे साधारण स्त्री नहीं थी विशेष गुणों की अधिकारी थी। वे अनपढ़ होते हुए भी मिथ्या विश्वासों से दूर थी। महाराज जी की शिक्षा को बहुत अच्छी तरह समझती थी और सभी धर्म संबधियों की धन्यवादी थी धन्यवादी रहती थी। इस संसार में धन व शिक्षा की बहुत मान्यता है परन्तु इन भावों की नहीं। उन्होंने मरणोपरांत अपने 'नेत्र' दान दिया जो अपने आप में परोपकार का एक उदाहरण है। ऐसे व्यक्तित्व के चरणों में बैठना एक परम सौभाग्य है तथा उनके पारिवारिक सदस्यों को अधिक से अधिक आर्शीवाद मिले।

इसके बाद 'हे देह त्यागी संबंधी हमारे' भजन का गान किया गया। सभापति जी ने आत्मा के शुभ व शांति की प्रार्थना की। 3721/- रूपये की राशि का दान एकत्रित किया गया। इस तरह पुण्यतिथि की सभा बहुत ही प्रभावशाली रही।

सब सदस्यों को दोपहर का खाना खिला कर विदाई की गई ।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- देव- धर्म- मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21- डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Post